it is correct to say that the catering in Ashoka Hotel is the worst in the country. Maybe one day he might have run into a bad omelette. But that does not mean that the whole hotel should be condemned. But I agree there is considerable room for improvement and we are looking into it.

SHRIMATI ILA PALCHOUDHURI: May I know whether, in view of the fact that now these Hotels have been taken over by the Ministry of Tourism, they are going to furnish them with all the Indian handicrafts goods as far as possible, because it has been reported that many of the things that are in the Ashoka Hotel were brought from foreign sources?

DR. KARAN SINGH: As the hon. lady Member, I am sure, is aware fairly recently, the whole of the main lounge of the Ashoka Hotel was re-furnished and it was done entirely in an Indian decor with Indian fabrics and Indian beautifications. I think it is a very good idea that we should use Indian goods, as much as possible, particularly in textiles and any other such requisites. It would be absurd for us to import from abroad when we can produce better things in the country.

SHRI TENNETI VISWANATHAM: We have adopted the Ashoka Chakra as the emblem on a matter of ideology. Has Ashoka Hotel anything to do with this Ashoka ideology or is there any single Ashoka tree in Ashoka Hotel?

DR. KARAN SINGH: I think, the only thing I can is that the name Ashoka is, by no means, the monopoly only of a tree. We wanted to name a Hotel after one of our great rulers.

SHRI M. N. NAGHNOOR: It is our normal experience that with the change of management of an organisation, the cost increases. Will the hon. Minister assure this House that there will be no additional or unreasonable extra cost in the management of these hotels?

DR. KARAN SINGH: By cost, I assume, the hon. Member means tariff rate.

SHRI M. N. NAGHNOOR: I mean the maintenance of hotels.

DR. KARAN SINGH: I can only give the assurance that we will try and run the Hotel as profitably and as efficiently as possible. I cannot give any other definite assurance.

SHRI S. KANDAPPAN: I would like to know whether it is a fact that some management consultants have been appointed even without consulting the board of directors to advise in the matter of management of the Ashoka Hotel. I would also like to know whether, after taking over all these Hotels, they have been considering to have a sort of uniform administrative set-up in all these Hotels.

DR. KARAN SINGH: The question of management consultancy is really something which falls within the realm of the Corporation. I do not immediately have the information which the hon. Member has asked for. It cannot really be uniform because the Ashoka Hotel is a five-star Hotel, the Janpath, at present, is a three-star Hotel, the Ranjit is a two-star Hotel and the Lodhi Hotel is a one-star Hotel. Therefore, naturally, the standards of management will vary. But we want to have, as far as possible, uniform efficiency in all these Hotels.

SHRI S. KANDAPPAN: Is the Minister prepared to give the information about that?

DR. KARAN SINGH: I will inform him about it.

INTERNATIONAL CONFERENCE "CASTASIA" TO BE HELD IN NEW DELHI

+

*394. SHRI MAHANT DIGVIJAI NATH:
SHRI G. S. REDDI:
SHRI HEM BARUA:

Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) whether it is a fact that an International Conference known as 'Castasia' is to be held in New Delhi in August, 1968;

(b) if so, how many countries are expected to participate in it;

(c) whether this conference has been called by the Government of India or UNESCO; and

(d) the subjects which will be discussed at the Conference?

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भागवत झा आजाद) : (क) जी हां, दिल्ली म ऐप्लिकेशन आफ साइंस एण्ड टेक्नालोजी

टु दि डेवेलपमेंट आफ एशिया पर एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस 9 अगस्त से 20 अगस्त तक बुलाई गई है।

(ख) जिन देशों के इसमें भाग लेने की सम्भावना है वे हैं :

(1) यूनेस्को के 26 मेम्बर सदस्य।

(2) यूनेस्को के नान-मेम्बर स्टेट्स के दर्शक।

(3) यूनाइटेड नेशन्स सिस्टम के प्रतिनिधि, और

(4) अन्तर्राज्यीय संस्थाओं एवं अन्तराष्ट्रीय गैर-राज्यीय संस्थाओं तथा निजी संस्थानों के दर्शक।

(ग) यह कान्फ्रेंस यूनेस्को ने बुलाई है।

(घ) इस कान्फ्रेंस में निम्नलिखित विषयों पर विचार होगा :

(1) एशिया में विज्ञान तथा तकनीकी की वर्तमान स्थिति।

(2) विज्ञान एवं तकनीकी के विकास के लिये प्रयोग की प्रारम्भिक आवश्यकतायें।

(3) एशिया के देशों में वैज्ञानिक शिक्षा में सुधार।

(4) विज्ञान नीति और उस का राष्ट्रीय विकास योजना से सम्बन्ध।

(5) 1965 से 1980 तक की रिसर्च और डेवेलपमेंट की योजना पर विचार।

श्री महन्त दिग्विजय नाथ : ऐसा सम्मेलन पहले भी किसी देश में हुआ है या यह पहले पहल भारत में हो रहा है? यदि हुआ है, तो उससे भारत और अन्य देशों को क्या लाभ हुआ है?

श्री भागवत झा आजाद : यूनेस्को ने ऐसा सम्मेलन लेगास में अफ्रीका के लिये 1964 में बुलाया था, दूसरा सम्मेलन 1965 में सेन्टियागो में लेटिन अमरीका के लिये बुलाया गया था और यह तीसरा सम्मेलन एशिया के लिये बुलाया गया है। इसमें विज्ञान तथा तकनीकी का किस तरह से एशिया देशों की प्रगति के लिये प्रयोग किया जाये इस पर विचार होगा।

श्री महन्त दिग्विजय नाथ : इस सम्मेलन में क्या कृषि का तकनीकी एवं वैज्ञानिक आधार पर संगठन करने एवं उत्पादन बढ़ाने पर भी विचार किया जायेगा? यदि हां, तो वह तकनीकी एवं वैज्ञानिक आधार क्या होगा और खाद्य तथा कृषि पर उसका क्या असर पड़ेगा?

श्री भागवत झा आजाद : जैसा मैंने अभी बतलाया कि जो विषय इस सम्मेलन में विचार के लिये आयेगा वह है कि एशिया में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास किस तरह हो। साथ ही साथ इस पर भी विचार होगा कि हमें तकनीकी का विकास करने के लिये प्रयोग करने के पूर्व किन बातों की आवश्यकता है। साथ ही इस सम्बन्ध में भी योजना बनाई जायेगी कि 1965 से 1980 तक किस प्रकार वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास किया जाये।

श्री महन्त दिग्विजय नाथ : मेरा प्रश्न यह था कि क्या इसमें कृषि पर भी कोई विचार होगा, और उसमें जो निर्णय होगा उसका हमारे कृषि पर भी क्या कोई असर पड़ेगा?

श्री भागवत झा आजाद : जहां तक इस संगठन का कृषि से सम्बन्ध है, निश्चय ही उस पर विचार किया जायेगा।

SHRI HEM BARUA: Is it a fact that an invitation has been accorded to China and a five-member Chinese delegation is attending this Conference to be held at Delhi; if so, may I know what steps Government have taken to see that the Chinese delegation does not indulge in political tirades against India as was done under Mr. Ko Mo Jo some years back?

SHRI BHAGWAT JHA AZAD : It is a fact that China is a member of this conference and its delegation is attending this conference.

SHRI HEM BARUA : There is no reply to the second part of my question. When there was a conference here years back—Shri Nehru was our Prime Minister then—the conference was attended by the Chinese delegation under Mr. Ko Mo Jo; that delegation started abusing India in the heart of India, in Delhi, and we could do nothing about it. I just wanted to know from Government what steps they are going to take to see that this delegation attending this Castasia Conference does not indulge in political tirades against us.

SHRI BHAGWAT JHA AZAD : It is an international conference called by the UNESCO and the member-states are expected in this conference to concentrate upon and confine themselves only to the subjects that are being discussed and not politics. As I have already said, the subjects to be discussed in the conference are science and technology and their application. Therefore we expect all member-states to stick to it.

SHRI RANGA : Let the senior Minister reply and say whether he has thought about it. His question is : What steps would Government take in order to see that they would not abuse our hospitality?

MR. SPEAKER : Can you successfully prevent the Chinese from doing some other propaganda than the conference work?

THE MINISTER OF EDUCATION (DR. TRIGUNA SEN) : We had a discussion with the organisers. No State delegate will indulge in any political propaganda. This is the assurance given by them.

SHRI HEM BARUA : Are we to understand that the assurance is only a hope?

SHRI RANGA : Whoever presides over that conference has to warn them in advance and see to it that they do not do so.

MR. SPEAKER : Yes; you have warned them sufficiently.

SHRI MANUBHAI PATEL : India is playing host to this conference. May I know what will be the financial liability; what percentage of expenditure will India have to bear?

SHRI BHAGWAT JHA AZAD : The financial expenditure of this conference will be Rs. 2.625 lakhs.

श्री रवि राय : जब दक्षिण अफ्रीका के ओलिम्पिक में योगदान करने का सवाल आया था तब श्री त्रिगुण सेन ने यहां पर खुद जवाब दिया था कि चूंकि दक्षिण अफ्रीका रंगभेद को चला रहा है और वह उसमें आ रहा है इसलिये हम उस में नहीं जायेंगे । चीन ने हम पर हमला किया है । क्या हम ने पहले कभी कोई शिकायत की है कि चूंकि चीन हम पर हमलावर है इसलिये हमारे यहां के सम्मेलन में उसको योगदान नहीं करना चाहिये । जब दक्षिण अफ्रीका के बारे में इस तरह से कहा गया था तब चाइना के बारे में क्यों शिकायत नहीं की गई ? दूसरा सवाल यह है कि जहां तक टेक्नालोजी का सम्बन्ध है जो चीजें एशिया में बनती हैं, उसमें एक चीज को बनाने के लिये हिन्दुस्तान को सात मिनट लगते हैं । चीन जैसे देश में चालीस मिनट लगते हैं और रूस और अमरीका जैसे देशों में छः और तीन मिनट लगते हैं । यह जो असमानता है इस असमानता को कम करने के लिये क्या इस सम्मेलन में विचार होगा ।

गांधी जी के जो स्माल यूनिट मशीन के बारे में विचार थे उनको भी यहां रखा जायेगा ? उस सिलसिले में मातृभाषा के जरिये टैक्नीकल शिक्षा देने के बारे में भी यहां बहस होगी ?

श्री भागवत झा आजाद : जैसा मैंने बताया है इस कान्फ्रेंस में विचार किये जाने वाले विषय हैं अगले 65 से 80 तक के वर्षों में किस तरह विज्ञान और तकनीकी का विकास एशिया के देशों में प्रगति लाने के लिये हो । ऐसे भी टापिक्स हैं, उपविषय हैं जिन पर इस कान्फ्रेंस में विचार किया जाएगा । इसके पहले जो कान्फ्रेंस हुई थी लागोस और सैंटियागो में उसके आधार पर

हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के सम्मेलनों में इन विषयों पर विचार बड़ा उपयोगी होता है और इनसे एशिया के देशों को अपना विकास करने में बल मिलता है ।

श्री रबि राय : जवाब पूरा नहीं दिया है। दक्षिण अफ्रीका हमलावर नहीं था लेकिन हमने उसके बारे में शिकायत की थी। चीन हमलावर था, उसके बारे में आप कह रहे हैं कि लागोस में हुआ था....

श्री भागवत झा आजाद : मैं क्षमा चाहता हूं। मुझे यह पहले ही कह देना चाहिये था कि इस समय जिस चीन के सम्बन्ध में आप कह रहे हैं, कम्युनिस्ट चाइना वह इसमें नहीं आ रहा है, भाग नहीं ले रहा है क्योंकि रैड चाइना यू० एन० का मैम्बर नहीं है।

श्री क० ना० तिवारी : अभी बताया गया है कि इस सम्मेलन के पूर्व भी दो सम्मेलन हो चुके हैं। उन सम्मेलनों में जो प्रस्ताव पास हुए उनको कार्यान्वित करने के लिए क्या कोई मशीनरी है ताकि उनको बढ़ावा मिले? यदि नहीं है तो क्या इस सम्मेलन में इसके ऊपर भी विचार होने जा रहा है कि कोई इसके बारे में रास्ता निकाला जाए?

श्री भागवत झा आजाद : जैसा मैंने बताया है युनेस्को इस सम्मेलन को बुलाती है इसलिए इसमें विचार किये जाने वाले विषयों एवं उनके कार्यान्वियन किस प्रकार हो, समन्वय किस प्रकार हो, इसको वह देखती है। वह इस काम को करती है।

DR. MAITREYEE BASU: The hon. Minister has used the word 'techniki'. I do not know what he means by that. Does he mean 'technique' or 'technical'? Is it the translation for the word technique or technical? Whatever he means, does he think that he is enriching the Hindi language by using words like that?

MR. SPEAKER: It is a correction of the language. No reply is needed.

श्री बलराज मधोक : यह प्रसन्नता का विषय है कि मंत्री महोदय ने बताया है कि रिपब्लिक आफ चाइना का नुमाइंदा आ रहा है। अगर उन्होंने पहले ही इस को बता दिया होता तो हाउस का इतना समय व्यर्थ न जाता। मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार रिपब्लिक आफ चाइना को दूसरे मामलों में भी मान्यता प्रदान करती है। इस कान्फ्रेंस में तो रिपब्लिक आफ चाइना के नुमाइन्दे आ रहे हैं लेकिन कुछ ही दिनों के बाद एशियाई देशों की लेबर कान्फ्रेंस होने वाली है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या उसके अन्दर भी वहां के लोगों को बुलाया जा रहा है या नहीं बुलाया जा रहा है? अगर नहीं बुलाया जा रहा है तो यह जो अलग अलग प्रकार की नीति है भारत सरकार की, इसके बारे में उसको क्या कहना है?

इस समय देश के सामने जो बुनियादी प्राब्लम विज्ञान और टैक्नोलाजी का है वह यह है कि हम यहां बेसिक रिसर्च पर जोर दे रहे हैं जबकि देश को जरूरत है डिवेलेपमेंट रिसर्च की और एप्लाइड रिसर्च की। उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है और यही कारण है कि देश इतना रुपया खर्च करने के बाद भी साइंस के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। मैं जानना चाहता हूं कि आपने जो डैलीगेशन इस कान्फ्रेंस के लिए भेजा है, उसमें कौन कौन से साइंटिस्ट हैं, क्या वे बेसिक रिसर्च वाले हैं या एप्लाइड रिसर्च वाले और डिवेलेपमेंट रिसर्च वाले? क्या हमारे देश के जो बहुत से वैज्ञानिक हैं, जो हमारे नेशनल हैं और जिन्होंने दूसरे देशों में बड़ा नाम कमाया है, उनमें से भी किसी को सरकार ने निमंत्रित करके अपनी ओर से इस कान्फ्रेंस में भेजने का प्रबन्ध किया है?

DR. TRIGUNA SEN: Sir, this Conference has been called by the UNESCO. So, the UNESCO invited the member-States to this conference. I do not know whether India will invite them or not when the Labour Conference will be held. Only member-States who are affiliated to the

UNESCO have been invited by UNESCO. Regarding the second question, the conference is dealing mainly with applied research —how science could be applied for the benefit of mankind. I suppose these were the two questions asked. We are not discussing only fundamental research but science as it should be applied for the benefit of humanity.

SHRI BAL RAJ MADHOK: Who is leading our Delegation?

SHRI HEM BARUA: Who has invited the observers? Is it the Minister or the U.N.? *(Interruptions)*

DR. TRIGUNA SEN: It is an inter-governmental meeting and the UNESCO has invited the member-States.

SHRI BAL RAJ MADHOK: Who is leading our delegation?

DR. TRIGUNA SEN: So far as members are concerned.. *(Interruption)*

MR. SPEAKER: The question is: who is leading our delegation?

DR. TRIGUNA SEN: I am leading the Delegation.

श्री महाराज सिंह भारती : विज्ञान और तकनीक का विकास करने के लिये यह कान्फ्रेंस हो रही है। यूरोप और अमरीका के देशों के सामने जो समस्या है, हमारे सामने उससे बिल्कुल भिन्न, सोलह आने भिन्न, समस्या है। जापान ने अपने यहां स्माल स्केल टेक्नालाजी के आधार पर इतनी प्रगति की है। फिलीपीन से चावल आपके यहां आया है। रूस से और दूसरे बड़े मुल्कों से नहीं आ पाया है। छोटे छोटे दशों से हमें फायदा पहुंच जाता है और उससे फायदा ज्यादा पहुंच सकता है जिस में ज्यादा आदमी लगें और कम पूंजी लगे। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस कान्फ्रेंस में इस समस्या पर भी सरकार मजबूती से इस विचार को रखेगी कि इस प्रकार की जो स्माल टैक्नालाजी है इसको बढ़ावा मिले और खेती के लिये एप्लाइड साइंस का योग लेने के लिये उसके नोहऊ के पैसे न देने पड़ें और खुलेआम उसका आदान प्रदान एशिया के देशों में हो जाए ?

श्री भागवत झा आजाद : यह ठीक है कि हमारे प्रतिनिधि मण्डल को इस बात पर जोर देना चाहिये और हम उस पर देंगे। टैक्नीक एवं विज्ञान के सहारे जहां तक हमारे विकास का सम्बन्ध है, उस पर अधिक जोर दिया जाए, यह ठीक है। माननीय सदस्य ने जापान का उल्लेख किया है। मैं कहूंगा कि जापान से भी एक मजबूत प्रतिनिधि मण्डल इस सम्मेलन में भाग लेने आया है और वह भी इस विषय पर जोर डालेगा और निश्चय ही आपकी इच्छा के अनुरूप हम भी इस पर जोर डालेंगे।

SHRI D. C. SHARMA: There was a blistering editorial on the delegation for this Conference in the *National Herald* either yesterday or the day before yesterday—I think, it was yesterday. In that editorial it has been said that all the persons who are going to represent India there excepting the person who is leading the Delegation are such as have been out of touch with science, modern or up-to-date science—they do not have much acquaintance with applied science—, are such as have more of commercial interest than of scientific interest. May I know if the Ministry of Education will come forward to rebutt that editorial which has appeared in a very reputed paper like the *National Herald*? *(Interruption)*.

DR. TRIGUNA SEN: I can reply to the hon. Member, but I cannot rebutt what appeared in the press; that is not my habit. As I said in the beginning, the Director-General was authorised to convene a conference of Ministers responsible for the application of science and technology in their respective States to the development of Asia. This is number one.

In our Delegation, of course, I am the leader. Then there are: Dr. D. R. Gadgil, Deputy Chairman of the Planning Commission—Alternate Leader—, Dr. Atma Ram, Dr. Kalelkar, Director-General of Technical Development, Dr. Khosla representing the National Institute of Science, Dr. D. S. Kothari, Chairman, University Grants Commission, Dr. B. D. Nag Choudhuri, Member in charge of education and science, Planning Commission, Dr. B. P. Pal, Director-General of Indian Council of Agricultural Research....

SHRI D. C. SHARMA: All officials! No non-officials?

DR. TRIGUNA SEN: Are they not scientists? I do not agree that they are not scientists—men like Dr. Kothari and Dr. Pal who are responsible for implementation..(*Interruption*)

SHRI BAL RAJ MADHOK: Who, among them, is connected with applied research?

MR. SPEAKER: Next Question..

DR. TRIGUNA SEN *rose*—

MR. SPEAKER: Next Question..Mr. Shiv Kumar Shastri..May I request the hon. Minister to sit down now?

SHRI D. C. SHARMA: The hon. Minister is a good friend of mine, but he has been caught on the wrong foot today.

प्रशासनिक सुधार आयोग द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन

+

*395. श्री शिवकुमार शास्त्री :
डा० सूर्य प्रकाश पुरी :
श्री रामावतार शर्मा :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री ओंकार लाल बेरवा :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार को प्रशासनिक सुधार आयोग से किन-किन विषयों के बारे में प्रतिवेदन मिले हैं;

(ख) क्या सरकार ने उनमें से कुछ प्रतिवेदनों को कार्यान्वित करने का निश्चय किया है; और

(ग) शेष प्रतिवेदनों के बारे में सरकार कब तक अन्तिम रूप से निर्णय कर सकेगी?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : (क) से (ग). सदन के सभा पटल पर एक विवरण रख दिया है।

विवरण

(क) विषय तथा प्रस्तुत करने की तारीख : 20-7-1968।

(i) नागरिकों की शिकायतों के निवारण की समस्याओं पर प्रतिवेदन—20-10-1966;

(ii) योजना के लिए व्यवस्था पर अन्तरिम प्रतिवेदन—29-4-1967; अन्तिम—14-3-1968;

(iii) सरकारी क्षेत्र उपक्रमों पर प्रतिवेदन—17-10-1967;

(iv) वित्त, लेखा व लेखा-परीक्षा पर प्रतिवेदन—13-1-1968; ।

(v) आर्थिक प्रशासन पर प्रतिवेदन—

(ख) इन प्रतिवेदनों की प्रक्रिया के बारे में स्थिति इस प्रकार है :

(i) नागरिकों की शिकायतों के निवारण की समस्या पर प्रतिवेदन

संस्थानिक व्यवस्था को स्थापित करने के सम्बन्ध में प्रमुख सिफारिश, जिस में लोकपाल और लोकायुक्त भी शामिल हैं, कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार कर ली है। इस विधेयक नामतः "लोकपाल और लोकायुक्त विधेयक 1968" 9 मई, 1968 को लोक सभा में पुनः स्थापित किया गया था और अब वह संसद् के दोनों सदनों की एक संयुक्त समिति को भेजा हुआ है।

(ii) योजना के लिये व्यवस्था पर अन्तरिम प्रतिवेदन

इस प्रतिवेदन में समाविष्ट सिफारिशों पर सरकार के निर्णय बतलाने वाले 17 जुलाई, 1967 को लोक सभा में प्रधान मंत्री के वक्तव्य की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है।